अंतरा-शब्दशक्ति

उपहार

(काव्य संग्रह)

चित्राकन- अभीषेक बौड़ाई

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

उपहार

(काव्य संग्रह)

(कमल वीथि पुष्प-4)

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-81-937361-8-0

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

कार्यालय :१५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट) म.प्र (४८१३३१

शाखा :एस-२०७ ,नवीन भवन ,इंदौर प्रेस क्लब परिसर ,इंदौर) म.प्र (.४५२००१

दूरभाष) :कार्या ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना -www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © **डॉ.** भारती वर्मा बौड़ाई

मूल्य: ६५ .०० रुपये

आवरण चित्र: अभिषेक बौड़ाई

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

UPHAR by Dr.Bharti Verma Baurai'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत :प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

कुछ मन की

बेटे अभिषेक को..
जन्मदिन पर अशेष शुभकामनाओं
और आशीर्वाद के साथ
माँ की ओर से कुछ मन की

मुश्किलों को हराते हैं,...
चलो थोड़ा मुस्कुराते हैं...

बेटे के जन्म के बाद जब पहली बार उसे गोद में लेकर जिस अनिर्वचनीय सुख की अनुभूति हुई थी, आज अपनी पुस्तक ‘ उपहार ‘ के लिए ‘ कुछ मन की ‘ के अंतर्गत अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करते हुए जैसी उसी सुख के सागर में डूबी जा रही हूँ मैं! वो सारे चित्र एक-एक कर आँखों के सम्मुख आते चले जा रहे हैं।

चौबीस वर्ष का समय... देखते-देखते कब बीत गया, वो नन्हा सा बेटा.. जो हमारी उँगली थाम कर चलता था, कब हमारे हाथ थाम कर हमारा सहारा बन गया...पता ही न चला। मेरी लोरी सुन कर सोने वाला आज जब सोने से पहले मुझे फोन कर, बहुत सारी हिदायतों के साथ अपना ध्यान रखने को कहता है, तो लगता है बेटा छोटी सी आयु में ही बहुत बड़ा और समझदार हो गया है।

टेक्नो सेवी भी अपने बच्चों के कारण ही बन पाई मैं।सपने देखना और उनमें रंग भरना, बच्चों की तरह मस्ती से जीना... सब इन्हीं से सीखा। जीवन की उलझनों में जब उलझती चली जाती हूँ तो ये बच्चे कितनी आसानी से बाहर निकाल देते हैं... ये तो आज के बच्चों से ही सीखा जा सकता है।

बड़े होते बच्चों के साथ को भरपूर जीने के लिए सरकारी नौकरी तक छोड़ने में हम पीछे नहीं हटे।बच्चों को जो देना है और उनसे जो पाना है, उसके लिए समय से बड़ा धन कोई नहीं हो सकता... इसलिए नौकरी छोड़ कर देहरादून आने के बाद नौकरी नहीं की। तन-मन और धन से पूर्णरूपेण बच्चों के साथ रही।आज जब वे एक अच्छे इंसान बन कर अपने कैरियर और जीवन में श्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहे हैं तो माता-पिता के लिए इससे बढ़ कर श्रेष्ठ उपलब्धि कोई और हो ही नहीं सकती। कोई भी अभिभावक अपने बच्चों को अपना समय, साथ और प्यार देता है तो वो संतान के लिए सबसे श्रेष्ठ देय उपहार है।

जब पत्रों को लिखने का चलन था, तब वो भी आत्मीय संवाद के माध्यम हुआ करते थे। मोबाइल के चलन ने जहाँ और कई सुविधाओं के मार्ग खोले, वहीं इस चलन को लगभग समाप्त ही कर दिया। मोबाइल पर कितनी ही बातें कर लेने के बाद भी बहुत कुछ अनकहा रह जाता है। ऐसे में मेरी समय-समय पर पर लिखी ये रचनाएँ बच्चों से आत्मीय संवाद का माध्यम बनी, जो अनकहा रह जाता था, उसे कहने का साधन बनी। इस तरह से होने वाला संवाद बच्चों को भी रुचिकर लगता था, तो यह रचनात्मक संवाद भी हमारे बीच शक्तिशाली सेतु बना रहा।मेरा यह भी प्रयास रहता था कि पेपर-पैन न सही, मोबाइल पर ही वे भी संवाद का कोई माध्यम अपनाएँ।कभी-कभी वे भी अपने मन में उठने वाले भावों को वहाट्सअप पर मुझे लिख कर भेजते हैं तो बहुत अच्छा लगता है।संवाद किसी भी माध्यम से हो, होते रहना चाहिए।बहुत सारी समस्याएँ तो ऐसे में सिर उठा ही नहीं पाती, और जो उठती हैं, वे भी आपसी संवाद होते रहने के कारण अपना निदान स्वयं कर लेती हैं।

आज उसी संवाद के रूप में रची गई ये रचनाएँ जन्मदिवस के उपहार के रूप में बेटे अभिषेक को अपने अशेष आशीर्वाद और शुभकामनाओं के साथ सौंपती हूँ।

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

अनुक्रमणिका

1. सफलता	7
2. मुश्किलें	7
3. जीवन	7
4. चढ़ो शिखर	7
5. भैयादूज - 2015	8-9
6. जब तुम मिले हमें	10-11
7. सपने	12
8. लक्ष्य	12
9. रक्षाबंधन - 2016	13-14
10.मातृ दिवस पर...एक पत्र बेटे के नाम	15-16
11.चैकड़ी पापा	17-18
12.मेरा बेटा	19
13.तुम	20
14.मैं क्या लिखूँ ऐसा,...	21
15.तंज	22
16.चुनौतियाँ	23
17.वरण किया है	24
18.मैं पंछी सा	25
19.वत्स!	26
20.खिड़की से	27
21.आदर्श बनो.....	28

22.जीवन सार्थक लगे... 29

23.मंत्र 30

24.अनुभव 31

25. प्रभाव 32

सफलता

तेरी सफलता के आरंभ को
कुछ इस तरह से जिया मैंने,
अपनी वेदना की गठरी खोल
उसे यों आज़ाद कर दिया मैंने।

मुश्किलें

मुश्किलों से हार कर
सीखा नहीं राहें बदलना,
मुश्किलों को रौंद कर
सीखा बस आगे ही बढ़ना।

जीवन

जीवन तो हम सब जीते हैं पर हैं कुछ ऐसे लोग यहाँ
मातृभूमि हित सर्वस्व समर्पण करते हैं सब लोग कहाँ?
तुम ऐसे लोगों में अपना सबसे आगे नाम लिखाना
दुनिया देखे मुड़-मुड़ पीछे सबको ऐसी राह दिखाना।

चढ़ो शिखर

चढ़ो जीवन के नए शिखर पर रचो नया इतिहास
संग तुम्हारे अपने, सपने हों स्वाभिमान हो साथ,
बस देखे सारा जग तुमको काम करो कुछ ऐसा
शोर मचे सारी दुनिया में हो न कोई तुम जैसा।

भैयादूज - 2015
(भाव बेटे के....शब्द मेरे)

मेरी
मौनी बाबा सी
अकड़ू बहन
जो तुमने दिया
और जो
तुमसे मिला
सहेजा बहुत कुछ
कुछ फिसल गया
नासमझी में
मेरी मुट्ठी से
रेत की तरह।
ये रिश्ता
है ही कुछ ऐसा
बिना नोंक-झोंक के
दिन बीतता नहीं मेरा,
तुम्हारे हिस्से से भी
आँख बचा कर
खा न लूँ जब तक
लगता है
कुछ खाया ही नहीं।

गीले हाथ
दुपट्टे से पोंछने पर
तुम्हारा गुस्से से
लाल हुआ चेहरा
देखने में आता है
जितना मज़ा
उतना ही
मज़ा आता है
पोंछा लगे
कमरों के गीले फर्श पर
चलते हुए
तुम्हारी झुंझलाहट
देखने में।
कुछ समय तक
नहीं बोलना,
पर अपनी
इस नकचढ़ी दीदी को
मनाने का
कारगर नुस्खा भी तो
है मेरे पास

दो प्लेट मोमो
और स्प्रिंग रोल,
जिसमे से
फिर कुछ आँख बचा कर
मार लूँगा मैं
और तुम खुश।
ले जाऊँगा अचानक
मनपसंद फ़िल्म दिखाने
आखिर अपनी मनपसंद
पास्ता-मैकरोनी भी तो
जब-तब बनवानी है तुमसे,
छोटा भाई हूँ
इतना तो हक बनता ही है मेरा।
एक दिन
जब चली जाओगी
अपने पिया के घर,
माँ जब-जब कहेगी
मैं ही तो आऊँगा
तुम्हें लेने
मायके के
खुले आसमान की
उड़ान भरवाने के लिए।
फिर एक दिन
अपने-अपने
घोंसलों में,
उनकी सार-संभाल में
हम-तुम खो जाएँगे
मन तो चाहेगा
पर शरीर असमर्थ होगा
चाहेंगे मिलना, पर
दूसरों पर निर्भर होंगे
बस उसी दिन के लिए
स्मृतियों की गठरी को
धीरे-धीरे समेट कर,
बाँध कर, सबसे छिपा कर
सहेज रहा हूँ।
ईश्वर न करे
वो दिन आये
जब हम बहन-भाई को
अपनी-अपनी
गठरी को खोल कर,
उनमें झाँक कर
आँसुओं के साथ
सबसे छिप कर
अपने रिश्ते को
जीना पड़े।
इसीलिए आज
जो पल मिल रहें हैं
उन्हें लड़ते-झगड़ते,
रूठते-मनाते
आओ दीदी!
मिल कर साथ जी लें जरा।

जब तुम मिले हमें

जब
तुम मिले हमें
तो एक माँ-पिता को
मिला एक बेटा और
बहन को भाई
परिवार पूर्ण हुआ था हमारा
वो ख़ुशी आज भी
बरक़रार है।
हर वर्ष
जब आता है
जन्मदिन तो
अहसास होता है
कि तुम अपनी
उम्र से ज्यादा जिम्मेदार
समझदार हो गए हो
लगता है जैसे
तुम बड़े हो रहे हो
और हम बच्चे से
तुम्हारा हाथ पकड़
चलने लगे हैं
कितना गर्व होता है
ये सोच कर कि
कल जिसे
उंगली पकड़ कर
चलना सिखाया था
आज वो
हमारी उंगली थामे
साथ-साथ चल रहा है
सारे रिश्तों को
आँचल में समेट कर
सफलता के नए
प्रतिमान गढ़ रहा है
गढ़ो इसी तरह
स्वयं को

चलो वहाँ तक
जहाँ पहुँच कर
बनानी है तुम्हें
एक नई राह
अंधेरों में रचना है
एक नया सूरज
उगानी है दिलों में
एक नई सुबह
उड़ो, और ऊँचे उड़ो
दो अपने सपनों को
एक नई पहचान
बस इनके
साथ जियो
अपनों का प्यार
हिय में बसाए रहो
रिश्तों की ऊष्मता
ये मनमोहक संसार
रिश्तों का
जितना लुभाता है
उससे कहीं अधिक
भरमाता है
साथ अपनों का
भटकने से
बचाता है
उसकी पहचान रखना
अपने
बहुत अपने ही
जन्मों तक साथ
चलते हैं
मेरे बेटे
वे रहे या न रहे
पर आशीष बन कर
सदा साथ रहते हैं
उनको साथ लिए
चलना बस चलना
नई राहें चुन
नए पदचिह्न गढ़ना
लक्ष्य न मिले जब तक
कर्म यात्रा अनवरत रखना।

07-07-16

सपने

सपने
तिल-तिल मरें
एकदम
घोंट कर
मार दिए जायें...!
समस्याओं का समाधान
एक यही तो नहीं....!
समाधान है
नए सपने देखना
उन्हें जीना
पूरा कर
फिर-फिर
नए सपने देखना...!!!

लक्ष्य

जो लक्ष्य लिया उसे पाना है
निज मार्ग पर चलते जाना है
कोई सामने आये भी तो क्या
तेरी एक ठोकर में ज़माना है।

रक्षाबंधन - 2016
(भाव बेटे के....शब्द मेरे)

नए
घर के द्वार
खुल रहे हैं
तुम्हारे लिए
नए
आँगन में
खुशबुओं के
फूल खिल रहे हैं
तुम्हारे लिए
नए
द्वार, नई खिड़कियाँ
देख रहे हैं रास्ता तुम्हारा
नए
सपनों का आकाश
आशाओं के झरोखे
बन रहे हैं मेरी बहना
तुम्हारे लिए

छोटा तो हूँ मैं
और बड़ी तुम
पर मेरी बड़ी बहनिया
कब इतनी बड़ी हो गई
कि आज अपने घर
जाने को तैयार है
मेरी बहना
जब से जुड़े हैं
कुछ नए प्यारे से रिश्ते
लगता है जैसे
माँ, पापा और मुझे
जैसे पंख लग गए हैं
कामों की सूची
उन्हें पूरा करने की धुन
तुम जानती हो
माँ तो कई-कई रातों
सोती भी नहीं,

मैं उलझा रहता हूँ काम में
पर जब लौटता हूँ घर
तो सोचता हूँ
अब कुछ ही दिन
रह गए बाकी
तुम्हारे हाथों की
तुलसी,अदरक,लौंग
काली मिर्च की स्वादिष्ट
चाय पीने के,कितनी यादें हैं
तुम्हारे साथ चिढ़ाने
लड़ने,झगड़ने,मनाने की
और शाही पनीर, जो मुझे
अब किसी के हाथ का पसंद
आता ही नहीं
तुमने स्वाद के नए रंग
जो दे दिए मुझे
अपनी ये रेसिपी
माँ को जरूर
सिखा जाना
नहीं तो फिर
पनीर को राम-राम ही होगी मेरी तो,
आज रक्षाबंधन है
इस बार अपने छोटे होने के हक़ को
पूरा- पूरा उपयोग करूँगा
जो चाहूँगा, वो तुमसे ठगूँगा
राखी भी इस बार
स्पेशल चाहिए मुझे
फिर दशहरा, दीवाली, भैयादूज
सारे त्यौहार पूरे जोश से मनाएँगे
अगले साल जोश से
मगर थोड़े संकोच से
सब त्योहारों पर
तुम्हारे ससुराल आएंगे।

मातृ दिवस पर...एक पत्र बेटे के नाम

प्रिय अभिषेक

बहुत सी बातें हैं जिन्हें एक लंबे अरसे से कहना चाह रही थी, पर अपने-अपने कामों की व्यस्तता के चलते कहने का समय नहीं मिल पाया। जीवन का क्या.....आज है कल नहीं। तो क्यों न जो कहना है आज ही कह दिया जाए।

तुम वो कड़ी हो जिसने हमारे जीवन में जुड़ कर हमारे परिवार को संपूर्णता प्रदान की। बहन को भाई मिला। हम सौभाग्यशाली हैं बेटी-बेटे की माँ बनने के साथ जामाता ओर पुत्रवधु के रिश्तों को भी जीने का भरपूर सुख प्राप्त होगा।

पुरुष प्रधान समाज होते हुए भी हमने बेटी-बेटे में कोई भेदभाव न करते हुए तुम दोनों को एक समान परिस्थितियों में एक जैसी सुख-सुविधाएँ देते हुए बड़ा किया। हमारे अनुसार बच्चों के लिए स्वतंत्रता का अर्थ था....हमारे बच्चे अपनी रुचियों के अनुसार अपना लक्ष्य निर्धारित करें, अपने सपने स्वयं देखें और जिएं।अपनी इच्छाओं का दबाव बच्चों पर डालना कभी हमारे परिवार की परंपरा नहीं रही । जो स्वतंत्रता हमने अपने माता-पिता से पाई, वैसी ही तुम्हें देने का सफल प्रयास किया।

आज जब तुम अपने चुने सपने को पूरा करने की राह पर अपने भगीरथ प्रयास से आगे बढ़ रहे हो...तो मुझे तुम पर गर्व हो रहा है। मैं जानती हूँ कि एक असाधारण प्रतिभा तुम्हारे भीतर है। चुनौती लेकर सपनों में रंग भरने का गुण तुम्हें औरों से अलग करता है।

अपने सपनों को पूरा करने की यात्रा के क्रम में तुमने पथरीली धरा पर अपने पग रख दिये हैं। अब यात्रा भी तुम्हारी और निर्णय भी तुम्हारे। ऐसे में कुछ बातें हैं जो तुम्हें कहना चाहती हूँ।

तुम्हारा लक्ष्य बड़ा है तो उसे प्राप्त करने के लिए परिश्रम उससे भी बड़ा होना चाहिए। लक्ष्य साधने के लिए स्वस्थ रहना पहली शर्त है। जब माँ साथ न हो तो ये जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है कि जंक फूड से दूरी बनाते हुए संतुलित और पौष्टिक भोजन लेना अपनी दिनचर्या का अंग बनाओ।

कहते हैं....यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। अतः याद रखना जिस घर, समाज और देश में नारी का सम्मान नही होता वहाँ देवता भी निवास नहीं करते। नारी के सम्मान का संस्कार अपने घर की नारियों का सम्मान करके प्राप्त होता है। संस्कार व्यक्ति के जीवन में मिलने वाली सफलताओं में बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं।

एक और महत्वपूर्ण बात है...नर सेवा नारायण सेवा। मनुष्य ईश्वर द्वारा सृजित अनुपम रचना है। मनुष्य की सेवा करके ही हम ईश्वर को पा सकते हैं। हम पूजा, तीर्थ करें न करें, पर यदि सेवा करते हैं तो वह किसी तीर्थ से कम नहीं है। तन-मन-धन से सेवा को अपने कार्य के साथ अपने जीवन का अंग बनाना।

जीवन में विश्वास तो करना, पर अंधा विश्वास मत करना। विश्वास जब टूटता है तो अपने साथ बहुत कुछ ले जाता है। बुद्धि-विवेक के बल पर अपने ज्ञान-चक्षु खुले रखना।

अभिमान और स्वाभिमान के बीच बहुत ही महीन विभाजन रेखा है....इसे समझना। स्वाभिमान व्यक्ति को ऊंचाइयों की ओर ले जाता है और अभिमान रावण की तरह उसके पतन का कारण बनता है। इसे समझ कर ही जीवन में आगे बढ़ना होगा।

तुम्हारा आत्मविश्वास और विवेक तुम्हें जीवन में सफलता के शीर्ष पर पहुँचाने में सदा सहायक होंगे। इन सब के साथ , बल्कि इन सबसे पहले तुम एक अच्छा इंसान अवश्य बनना और सदा ईमानदारी के मार्ग पर चलना। यह कठिन अवश्य है पर असंभव नहीं।

जीवन बहुत छोटा है, इसे मुक्त होकर जीना। सपने देखना, उनमें रंग भरना और अपनों के साथ-साथ अपनी कर्मयात्रा प्रवहमान रखना।

तुम्हारी मम्मी

भारती

चैकड़ी पापा

लिख कर
दी थी तुम्हें
चैकड़ी पापा ने
जन्मदिन पर तुम्हारे
एक कहानी
अपने हाथ से
कागज़ पर....
पढ़ कर उसे
फूले नहीं समाये थे तुम
संभाल कर
रखने को
कह कर मुझे
हो गए थे
खेलने में मस्त!
और मैं!
इतनी लापरवाह
उस अमूल्य निधि को
ऐसा संजो कर रखा
जो आज
चाहने पर भी
हाथ न आया....
उलट-पुलट कर डाले
अपने सारे कागज़ी पुलिंदे
देख डाली
एक-एक किताब
पर भाग्य मेरा!

इस खोजी अभियान में
बहुत कुछ मिला
पर वो न मिला
जिसके लिए
कर डाला सारा सामान
तितर-बितर...
अब
चैकड़ी पापा के
आशीर्वाद बिना ही
जो नाना-मित्र थे तुम्हारे,
पहुँचेगा " उपहार "
जब तुम तक
तो याद कर उन्हें
नमन करना,
वे जहाँ भी हैं
अम्मा के साथ
वहीं से देख
हर्षातिरेक में
आशीष-वृष्टि से
सराबोर कर तुम्हें
कह रहे अम्मा से
अपना "दारा सिंह"
देखो कितना बड़ा
कितना समझदार हो गया
देखा तुमने.....?

मेरा बेटा

अपने
सपनों की
उड़ान को गति देने
कुछ दिन
बेटा घर से
दूर हुआ है
उसकी कुछ
मोहक, सच्ची
बातों ने
मन को मेरे
बहुत छुआ है
काम के संग-संग
सीख रहा है
दुनियादारी
समझने लगा
कमख़र्ची और
फ़िज़ूलख़र्ची के
वास्तविक अर्थ
जान गया
पैसा कमाना
जितना कठिन है
उससे कहीं कठिन है ज्यादा
सूझ-बूझ से उसे बचाना

बिखरा-बिखरा सा था पहले
अब अपने में
सिमट रहा है
अपने मन से जीने की
अपने मन की करने की
चाहत में बहुत नया कुछ
समझ रहा है
कल कितना
छोटा सा था
मेरी उंगली थामे
चलता था
आज सहारा
मेरा बन कर
साथी बन सँग
चल रहा है
अपने मन का
नभ-चाँद पाने को
सोच-समझ कर
सँभल-सँभल कर
नापतोल कर
बिना थमे
अपनी राह पर
मेरा बेटा चल रहा है।

27-04-17

तुम

तुम
बरसात की
पहली बूँद की तरह
देना आस नई।
तुम
अपने श्रम से
गहन तिमिर में
गढ़ना राह नई
तुम
अपने नवल
विचारों से रचना
नित प्रतिमान नए
तुम
अपने कर्मों से
पुरातन लकीरों के
सम्मुख
खींचना लकीर नई
तुम
सीमाहीन क्षितिज में
अदम्य जीवट के
साथ
भरना उड़ान नई

तुम
डरना मत
आएं चाहे राह में
विकट बाधाएँ कई
तुम
चलना लेकर साथ
बड़ों का आशीर्वाद
जगेंगीं आशाएँ नई
तुम
बढ़ना नित आगे
जब तक लक्ष्य न
पूरा हो
लेकर विश्वास नया
तुम
गढ़ना परिभाषा
संबंधों की मन, वचन
कर्म से सार्थक और
नई
तुम
बनना स्वयं आदर्श
चलेंगे राह तुम्हारी
साथी तुम्हारे कई

तुम
करना अंकित लेख
समय पर बनने को
इतिहास नया
तुम
बनना ऐसा वृक्ष
डटे, तने आँधियों के
सम्मुख
अपना अस्तित्व लिए
तुम
बहना हर उस राह
बन सको प्रकृति का
अनुपम उपहार
तुम
चलना आगे उनसे
पदचिह्न छोड़कर
अपने
जो आगे चले गए
तुम
करना उनसे होड़
जो बढ़ते रहते आगे
करके संकल्प नए

07-07-17

मैं क्या लिखूँ ऐसा,...

मैं
क्या
लिखूँ ऐसा
जो अब तक
तुम्हारे लिए लिखा नहीं

मैं
क्या
कहूँ ऐसा
जो अब तक
तुम्हारे लिए कहा नहीं

मैं
क्या
स्वप्न देखूँ
जो अब तक
तुम्हारे लिए देखा नहीं

मैं
क्या
करूँ ऐसा
जो अब तक
तुम्हारे लिए किया नहीं

मैं
क्या
दूँ ऐसा
जो अब तक
तुम्हें दिया नहीं

बड़ा
मुश्किल है ये सोचना भी
मेरे लिए तब
जब चाहती हूँ कहना
पर कह पाती कुछ नहीं

हो
जाती हूँ मैं निशब्द
तब सब कुछ छोड़निकल पड़ती हूँ
हाथ पकड़ तुम्हारा
सपनों की रपटीली पगडंडियों पर

यदि
मैंने पाए हैं कुछ सुफल
अपने पूर्वजन्म के पुण्यों के
फलस्वरूप
तो मैं वो सब तुम्हें सौंपती हूँ
और करती हूँ प्रार्थना अपने ईश से

मैं
लिख सकूँ
तुम्हारी खुशी के,जीत के गीत
चारों दिशाओं में लिखूँ
तुम्हें खुश देखूँ स्वयं भी खुश दिखूँ।
(07-07-17)

तंज

तंज
जीवन में
भर देता है कई अर्थ
उसके
जो लेता है उसे
दिल और दिमाग़ से
जुट जाता है
उसे पाने के लिए
जिसके लिए
सुनना पड़ा तंज
गुज़रना पड़ा
गहरे अवसाद से
उससे निकलने के लिए
किया गया श्रम
लिखता है सफलता की
कहानियाँ कई
जो बनती है प्रेरक
देती हैं उजाले
उस जैसों को
पर शर्त
केवल इतनी है
जीवन में
मिले तंज
केवल दिल से न ले कोई
ऐसे में उठे क़दम
नहीं होते सही
दिल और दिमाग़
जब चलते हैं साथ
तभी दिया जाता है
मुँहतोड़ जवाब
तंज को
अपनी सफलता की
असाधारण कहानी
लिखते हुए ।

चुनौतियाँ

रास्ते
ऊबड़-खाबड़
पथरीले अवश्य हैं
पर इन पर
चलने की
चुनौती स्वीकार है मुझे
क्योंकि आकर्षित करती हैं चुनौतियाँ
ये साहस भरती हैं मुझमें
चलने का
संघर्षों में तपने का
थकने पर ऊर्जा बन कर
मेरे विचारों को
करती हैं प्रकाशमान
बनती हैं सामर्थ्य
निराशा में
करती हैं रक्षा

निष्क्रियता के क्षणों में
चुनौतियों का साथ
जब तक रहता है
प्रेरणा का सूर्य
अस्त नहीं होता
संघर्ष नद प्रवहमान रहता है
जो टूटने नहीं देता
किसी भी
विषम परिस्थिति में,
बनी रहें
चुनौतियाँ जीवन में
चलता रहे
संघर्ष असफलता से
लगे न पूर्णविराम कभी
कर्म यात्रा पर।

वरण किया है

स्वयं
लक्ष्य
लिया है
चलने को
पथ कँटीला
वरण किया है
बने-बनाए मार्ग
सभी को
नहीं है भाते
कुछ अनजाने
पथ बनने को
आवाज़ें देकर
अपने पास बुलाते
भाती नहीं
जग की रंगीनियाँ
दिखते वो पड़ाव
रुकीं हैं जहाँ
बेबस जिंदगियाँ
प्रतिभाएँ अपनी
आ रहीं काम दूसरों के
हम तलाशते उन्हें
औरों में
नए पथ के निर्माण में
उलझेंगे भी
लहूलुहान भी होंगे
भ्रमित भी
तो कहीं
प्रभावित भी होंगे
मगर
इतना पता है
पराजित नहीं होंगे
लक्ष्य पर पहुँच
सफलता की
नई गाथा लिख
नवीन पथ पर
नई प्रतिभाएँ गढ़ेंगे
और पुनः एक
नया लक्ष्य चुनेंगे।

मैं पंछी सा

चीर कर
हृदय पर्वतों का
जिस तरह
निकली है गंगा
आज वैसे ही
आँधियों के बीच से
शान से शीश उठाए
मैं निकल कर
राह अपनी
गढ़ रहा हूँ
बनते जो बाधाएँ
देता हूँ मैं
उनको चुनौती
कर जतन तुम देख लो
तुम ही मेरी
शक्ति बन कर
आगे मैं
और पीछे सब
पथ प्रशस्त करते
मेरा जय गान करते
कल दिखोगे
कंटकों से भरी राहें
चाहे कितनी ही बना दो
लहूलुहान होकर भी
मैं अपने
पथ से विचलित न हूँगा
देखना एक दिन
अपने संस्कारों की
पूँजी संग लेकर
लक्ष्य पर अपने पहुँच
पंछी सा मुक्त नभ में
विचरण करूँगा।

वत्स!

वत्स!
बहुत ही
छोटी उम्र में
भरी बड़ी उड़ान,
नापने का
साहस किया
दूर-दूर तक दिखते
सीमाहीन गगन को,
अभी तो
यह आरंभ है
लक्ष्य बड़ा है
चलना है बहुत,
पर तुम
रुकना मत
बाधाओं से लड़ते
थकना मत
जीवन यात्रा में
स्वाभिमान का सौदा
करना मत
स्वप्नों को
जीने के लिए
बढ़ते जाना
बढ़ते जाना....
सफलता वरेगी..
यही आशीर्वाद है मेरा!!

खिड़की से

खिड़की से
दिखता है जितना
आसमान
उसे देख कर
हर्षित होते हैं वो
जिन्हें सीमाओं में
बाँध कर जीने की
आदत होती है.....

तुम उठो
खोल कर दरवाजा
निहारो पूरा आसमान
ओर तब
तय करो
अपनी उड़ान
जाँचो अपने हौसले को
अपने पंखों की ताक़त को....

और फिर
उड़ जाओं
सीमाहीन क्षितिज से
होड़ करने के लिए....

तब तक
उड़ते रहो
जब तक अपने
लक्ष्य की सीमा को
पहचान न लो.....

लक्ष्य सधा
तो नया गढ़ो
और फिर कमर कसो
नई उड़ान वास्ते......

पुकारते
रहेंगे सदा तुम्हें
चलने को नए-नए रास्ते....!!

29-04-18

आदर्श बनो.....

जो चल नहीं सकते उनके पैर बनो
जो सुन नहीं सकते उनकी आवाज बनो,

जो देख नहीं सकते उनकी दृष्टि बनो
जो बोल नहीं सकते उनके शब्द बनो,

जिनके हाथ नहीं चलो उनके हाथ बनो
खालीपन भरने को सेवा का कर्म चुनो,

सूनी आँखों को देने चलो स्वप्न नए बुनो
सत्कर्म करो ऐसे तुम सबके आदर्श बनो।

जीवन सार्थक लगे...

मेहनत
इतनी हो
हर पत्थर
जीत का गीत लिखे
स्वीकार
इतना हो
जिसमें स्वाभिमान दिखे
करो कुछ ऐसा
जीवन सार्थक लगे
लक्ष्य
ऐसा हो
काम करते हुए
हर दिन नया लगे।

मंत्र

जिस दिन
बाधाएँ बड़ी
दिखने लगे
तो समझ लेना
अंदर का साहस
चुकने लगा है
सफलता का मंत्र
केवल एक
हर बाधा
हर चुनौती
अपने
साहस के सम्मुख
लगे छोटी.....!!!!!

अनुभव

जीवन
जीवन में मिले रिश्ते
जीवन में मिले लोग
ये सभी
पाठशाला हैं
इसमें मिले अनुभव
बन जाते हैं
ऐसे महत्वपूर्ण दस्तावेज़
जिन्हें गाहे-बगाहे पढ़ कर
सीख जाता है मानव
कब, कहाँ, किसके सम्मुख
कैसे, कितना तोल कर
बोलना है
जिससे बुरा न लग जाए
सामने वाले को
भले ही
सामने वाला
क्षत-विक्षत कर डाले
अपने तीरों से
उसके मन को
जो टूट-टूट कर भी
टूटता नहीं
निखर कर
कराता है अहसास
राहें भले ही
आसान न हो जीवन की
सँजो कर रखी
अनुभव-पूँजी
मार्ग प्रशस्त करती
कहीं भी
कभी भी
पराजित नहीं होने देती

प्रभाव

हो प्रभाव अपना
दुआओं-दवाओं में
धर्म-कर्म में
पूजा-पाठ में
आस-विश्वास में
प्रेम-प्यार में
सेवा-त्याग में
पढ़ने-पढ़ाने में
अपने-परायों के
चरित्र निर्माण में
तो राह कठिन
पर असंभव नहीं है
मोह-लोभ
अर्थ-काम में
हो संतुलन
ईमानदारी का
तो रास्ते सुगम हो
प्रशस्त हो उठते है
देर है तो
बस पहला कदम उठा
चलने-दौड़ने की
नींव के लिए रखा
पहला पत्थर ही
प्रभावी होता है।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- डॉ.भारती वर्मा बौड़ाई
माँ	- श्रीमती कमला वर्मा
पिता	- बाबूराम वर्मा
जन्म स्थान	- देहरादून (उत्तराखण्ड)
जन्मतिथि	- 04 अक्टूबर 1957
शैक्षिक योग्यता	- एम.ए. (हिन्दी साहित्य), बी.एड., डी.फिल.(शोध द्वारा - गद्‌यकार बच्चन : एक आलोचनात्मक अध्ययन)
जीवन संगी	- श्री राकेश आनंद बौड़ाई
संतान	- दो (एक आत्मजा, एक आत्मज)
व्यवसाय	- 24 वर्ष तक अरुणाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग में अध्यापन। अक्टूबर 2005 मे स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली।
संप्रति	- स्वतंत्र अध्ययन और लेखन
निवास स्थान	- ''प्राच्य शिखर'' 95, दिव्य विहार, डांडा धर्मपुर, डाकघर - नेहरुग्राम, देहरादुन उत्तराखण्ड, पिन - 248001
फोन नं.	- 9759252537
मेल आई.डी.	- bharati.bourai007@gmail.com
प्रकाशित एकल पुस्तकें	- (1) कविता का अरुणांचल (कविता संग्रह) 1985 (2) बच्चन साहित्य : अध्ययन का उपक्रम (आलोचना) 1998 (3) सृजन समीक्षा 2018 (4) उपहार (काव्य संग्रह) (5) रंगों के साथ (काव्य संग्रह) (6) अंतर्मन की यात्राएँ (काव्य संग्रह) (7) आखर मीत (काव्य संग्रह)
प्रकाशित साक्षा संग्रह	- 18 साझा संग्रहों में रचनाएँ प्रकाशित
पत्र पत्रिकाएं	- लगभग 70 पत्र-पत्रिकाओं, ई पत्रिका, ब्लॉग में रचनाएँ प्रकाशित
सम्मान	- वाणिज्य मंत्री (वर्तमान रक्षा मंत्री) निर्मला सीतारमण सहित विभिन्न संस्थाओं, प्रकाशनों द्वारा लगभग 12 सम्मानों से सम्मानित
सामाजिक क्षेत्र	- अपने पति के ''अविराम प्रवाह ट्रस्ट'' द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों में सहयोग।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-81-937811-1-1

मूल्य- 65/-